मासिक पत्रिका अप्रैल 2021

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार	विजय भाटिया
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

ईश्वर के क्या दर्शन हो सकते हैं?

(क) ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते-ईश्वर के क्या दर्शन हो सकते हैं? ईश्वर वह चेतन सत्ता है जो सर्वव्यापी है। सर्वव्यापी है, तो मेरे-आपके भीतर भी है। जिसको देखना हो यह दृश्य होना चाहिए, देखनेवाला द्रष्टा होना चाहिए, दृश्य तथा द्रष्टा में दूरी होनी चाहिए। जब विश्व की चेतन सत्ता को हम व्यापी कहते हैं, तब उससे दूरी नहीं हो सकती, देखने के लिए दूरी आवश्यक शर्त है। जिन्होंने ईश्वर के दर्शन की बात कही है उन्होंने ईश्वर को एकदेशीय बना दिया है, मन्दिर में, गिर्जे में ला बैठाया है। ईश्वर क्या, हमें तो अपने आत्मा के भी दर्शन नहीं हो सकते। हम क्या हैं? हम सृष्टि की चेतन सत्ता की तरह एक चेतन सत्ता हैं। अगर हम अपना दर्शन करना चाहें, तो हमें अपने से दूर होना होगा। द्रष्टा बनने के लिए दूरी आवश्यक है। क्या हम अपने से दूर हो सकते हैं? अपने से दूर हुए कि अपना ही न रहे। बृहदारण्यक उपनिषद् (2 अध्याय, 14) में याज्ञवल्क्य मैत्रेयी को कहते हैं-'**येन इदं सर्वं विजानाति तं केन विजा-नियात् विज्ञातारं अरे केन विजानीयात्**'- अरे, जो जाननेवाला है, द्रष्टा है, उसे किससे जान सकते हैं? द्रष्टा-दूसरी, बाह्य वस्तुयों को तो देख सकता है, अपने को तो नहीं देख सकता, क्योंकि द्रष्टा की अपने से दूरी नहीं हो सकती, न सर्वव्यापी परमेश्वर से जो मेरे भीतर भी वर्तमान है मेरी दूरी हो सकती है। दर्शन की आवश्यक शर्त 'द्रष्टा और दृश्य में दूरी का होना' है जो आत्मा तथा परमात्मा में नहीं है।

(ख) तो क्या ईश्वर के दर्शन हो ही नहीं सकते है?- ऐसी बात नहीं है, उसे अनुभव किया जा सकता है, देखा नहीं जा सकता-जो दावा करते हैं कि उन्हें ईश्वर का प्रत्यक्ष हुआ है, अगर ईश्वर सर्वव्यापी है, तो उसे देखा नहीं जा सकता, उसका अनुभव जरूर किया जा सकता है। हम जब किसी को देखते हैं तो उसका बाहर का शरीर ही तो देखते हैं, उसके अन्दर क्या है-यह हमें नहीं दीखता। हाँ, क्योंकि हमें अपने शरीर में इन्द्रियों को छोड़कर किसी अतिरिक्त सत्ता की प्रतीति होती है, अनुभव होता है, इसलिए हम दूसरों में भी उसी प्रकार की सत्ता का अनुमान कर लेते हैं जो हमें अपने में अनुभव होती है। अपने में हमें अनुभव होता है कि हम शरीर से भिन्न हैं, इसलिये दूसरे में भी ऐसा ही होगा। जब वह मर जाता है, तब शरीर वैसे-का-वैसा रहता है, परन्तु यह बात सहज अनुभव में आती है कि उसके शरीर में से कुछ निकल गया जो पहले उसमें था, जो शरीर नहीं था, जो इन्द्रियों की पकड़ में नहीं आता था, वह शरीर को छोड़ गया। जैसे अपने शरीर में शरीर से अतिरिक्त न दीखनेवाली सत्ता का हम अनुभव करते हैं, वैसे ही इस विश्व में न दीखनेवाली चेतन सत्ता को देखा तो नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।

अगर कहो कि दर्पण में तो दीखता है, तो चलो ऐसे संसार की कल्पना करो जिसमें मुँह देखने का दर्पण न हो, अपना प्रतिबिम्ब देखने का कोई साधन न हो, संसार में तुम्हारे सिवाय कोई व्यक्ति न हो जो तुम्हें बतला सके कि तुम्हारा मुँह कैसा है -काला है, गोरा है, चितकबरा है, तो क्या तुम कह दोगे कि तुम्हारा मुँह नहीं है, तुम्हारी पीठ नहीं है? अपने मुँह के विषय में भी हम दूसरे के कहे से जानते है कि मुँह गोरा है या काला है, वह मुंह जो भौतिक है, जिसका रंग-रूप है।

(ग) ईश्वर का अनुभव ध्यान से किया जा सकता है जो तीसरी आँख है-ध्यान से जो अनुभव में आता है वह कल्पना नहीं है। ईश्वर का अनुभव कल्पना नहीं है। मन किसी ऐसी बात को सोच ही नहीं सकता जिसका आधार अनुभव न हो। ईश्वर के विषय में हमारा सोच सकना ही सिद्ध करता है कि इसके अनुभव का कोई आधार हमारी चेतना में कहीं छिपा पड़ा है। हमारी इन्द्रियों के जो विषय होते हैं उन्हीं को तो हम सोच

सकते हैं। रूप को हम देखते हैं, इसीलिए आँख के विषय को हम सोच सकते हैं; शब्द को हम सुन सकते हैं, इसीलिए कान के विषय को हम सोच सकते हैं। इसी प्रक्रिया को अगर उलटकर रखा जाय, तो कहना होगा कि जिस बात को हम सोच सकते हैं, उसका कोई विषय होता है, उसकी कोई इन्द्रिय भी होती है। रूप को हम सोच सकते हैं, इसलिए उसका विषय यह स्थूल-जगत् है, आँख उसकी इन्द्रिय है; शब्द को हम सोच सकते हैं इसलिए संगीत उसका विषय है, कान उसकी इन्द्रिय है; इसी तरह अनादि-अनन्त सत्ता के विचार को हम सोच सकते हैं, इसलिए आत्मा तथा परमात्मा उसके विषय हैं, ध्यान उसकी इन्द्रिय है। इस दृष्टि से ध्यान भी आँख-कान की तरह एक इन्द्रिय है जिससे आत्मा तथा ईश्वर का प्रत्यक्ष की तरह बोध होता है। ध्यान से जिस ईश्वर का पता चलता है वह कैसा है? जिन्होंने ध्यान से ईश्वर को जाना, उन्होंने उसका वर्णन करते हुए कहा है-

अपाणिपादो यवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्॥ (श्वेताश्वतर, 3-19)

-उसके न हाथ हैं, न पाँव हैं, फिर भी अत्यन्त वेग से वह गति करता है, बिना आँख के देखता है, बिना कान के सुनता है, जो-कुछ जानने योग्य है उसे वह जानता है, उसे कोई नहीं जान पाता। सृष्टि का वही महानु आदिपुरुष-'ईश्वर'-है। ■■

बैसाखी

बैसाखी का अर्थ वैशाख मास की संक्रांति है। यह वैशाख सौर मास का प्रथम दिन होता है। बैसाखी वैशाखी का ही अपभ्रंश है। इस दिन गंगा स्नान का बहुत महत्व है। हरिद्वार और हृषिकेश में बैसाखी पर्व पर भारी मेला लगता है। बैसाखी के दिन सूर्य मेष राशि में संक्रमण करता है। इस कारण इस दिन को मेष संक्रान्ति भी कहते है। इसी पर्व को विषुवत संक्रांति भी कहा जाता है।

बैसाखी, जिसे वैसाखी या वसाखी भी कहा जाता है, हर साल 13 या 14 अप्रैल को मनाया जाता है। अन्य भारतीय त्यौहारों की तरह सभी वर्ग विशेषकर सिख समुदाय से संबंधित लोगों द्वारा बैसाखी की प्रतीक्षा की जाती है क्योंकि यह उनके मुख्य उत्सवों में से एक है। न केवल यह उनके लिए नए साल की शुरुआत को चिन्हित करता है बल्कि यह फसलों की कटाई का जश्न मनाने का भी समय है।

बैसाखी सिख समुदाय के मुख्य त्योहारों में से एक है। यह उनके लिए नए साल की शुरुआत का प्रतीक है और इसे फसलों के पकने के उपलक्ष में भी मनाया जाता है। पूरे देश में हिंदू समुदाय के बहुत से लोग भी इसी कारण इस दिन को मनाते हैं। हालाँकि इस त्यौहार का नाम अलग-अलग क्षेत्र में भिन्न-भिन्न होता है। दूसरे भारतीय त्यौहारों की तरह बैसाखी भी लोगों को एकजुट करता है। सभाएं आयोजित की जाती हैं, मंदिरों और गुरुद्वारों को रोशनी और फूलों से सजाया जाता है, लोग जातीय परिधान की पोशाक पहनते हैं और अच्छे भोजन का आनंद उठाते हैं।

आम धारणा के विपरीत बैसाखी वास्तव में एक हिंदू त्योहार है। सिख गुरु अमर दास थे जिन्होंने सिखों के लिए इसके साथ-साथ अन्य दो त्योहारों - दीपावली और मकर संक्रांति को चुना था। हिंदू धर्म की ही तरह बैसाखी सिख धर्म में नए साल की शुरुआत का प्रतीक है और इसलिए भी यह जश्न मनाने का एक दिन है।

इसके अलावा पंजाब में फसल कटाई के रूप में भी बैसाखी को मनाया जाता है क्योंकि पंजाब क्षेत्र में इस समय के दौरान रबी फसल पक जाती है। किसान फसल के लिए भगवान का धन्यवाद करते हैं और भविष्य में बहुतायत के लिए भी प्रार्थना करते हैं।

यह दिन सिखों के लिए भी विशेष है क्योंकि नौवें सिख गुरु तेग बहादुर के निर्वाण के बाद, इस दिन सिख आदेश की शुरुआत हुई थी, जिन्होंने मुगल सम्राट औरंगजेब के इस्लाम को कबूलने के आदेश को अस्वीकार कर दिया था। इसके बाद उनके दसवें गुरु के राज्याभिषेक और खालसा पंथ का गठन किया गया।

वैसाखी पंजाब के लोगों के लिए फसल कटाई का त्योहार है। पंजाब में, वैसाखी रबी फसल के पकने का प्रतीक है। इस दिन किसानों द्वारा एक धन्यवाद दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिससे किसान, प्रचुर मात्रा में उपजी फसल के लिए ईश्वर का धन्यवाद करते हैं और भविष्य की समृद्धि के लिए भी प्रार्थना करते हैं। सिखों और पंजाबी हिंदुओं द्वारा फसल त्योहार मनाया जाता है। 20 वीं शताब्दी के शुरुवात में वैसाखी सिखों और हिंदुओं के लिए एक पवित्र दिन था और पंजाब के सभी मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों, ईसाइयों सहित, के लिए एक धर्मनिरपेक्ष त्योहार था। आधुनिक समय में भी ईसाई, सिखों और हिंदुओं के साथ-साथ वैसाखी समारोह में भाग लेते हैं। ■■

अप्रैल 2021 मास में साप्ताहिक सत्संग -(**यज्ञ**-प्रात: 8 से 9 बजे तक, **भजन/प्रवचन**-प्रात: 9 से 10 बजे तक)

दिनांक	वक्ता	विषय
04	श्री नरेश सोलंकी (9717637632)	भजन
11	श्री वीरेन्द्र शास्त्री (9810507498)	मर्यादा पुरुषोत्तम राम।
18	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	गुरुदत्त विद्यार्थी का आर्य समाज में योगदान।
25	श्री राजू वैज्ञानिक (7011475777)	जीवन में आनन्द प्राप्ति कैसे हो?

मार्च मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती सुधा भरारा	15,000/-	श्री अशीष तलवार	4,090/-	श्री सुनील मेहरोत्रा	2,000/-
डॉ. विनोद मलिक	10,000/-	श्री विजय ढल	2,100/-	श्रीमती सुनिता शर्मा	2,000/-
श्रीमती सतीश सहाय	7,400/-	श्री यतिन शर्मा	2,000/-	श्री राजेन्द्र कुमार	1,100/-
श्रीमती अकांक्षा मेहरोत्रा	5,100/-	श्रीमती आशा कम्पानी	2,000/-	श्री पी.एल. खाण्डपुर	1,100/-
श्री अरुण कुमार बहल	5,100/-	श्री साहिल मेहरोत्रा	2,000/-	श्रीमती दीपिका सहाय	1,100/-
श्रीमती उषा मरवाह	5,100/-	Ms. अइनारा मेहरोत्रा	2,000/-	श्रीमती अमृत पॉल	1,000/-
तनेजा फाउण्डेशन-श्री आर.के. तनेजा	3,500/-	श्रीमती ओनिका मेहरोत्रा	2,000/-	श्रीमती आदर्श चुघ	1,000/-
		Ms. अनैना मेहरोत्रा	2,000/-	श्री नरेन्द्र वाधवा	550/-

पुरोहित द्वारा एकत्रित धनराशि : ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 4,100/-

प्रार्थना क्यों करें?

सभी सुख पाना चाहते हैं और दुखों से बचना चाहते हैं। कोई भी सुख पाना हो या किसी भी दु:ख को समाप्त करना हो, तो उपाय एक ही है, पुरुषार्थ (प्रयास, परिश्रम)। यह तो स्पष्ट है कि हम जिस दिशा में जितना और जैसा प्रयास करते हैं उतना और वैसा फल हमें प्राप्त हो जाता है। प्रश्न यह है कि यदि ईश्वर है तो वह न्यायकारी है। न्याय का अर्थ है कि जो जैसे कर्म, पुरुषार्थ करे उसे वैसा फल मिले। तो जब हमें हमारे कर्म, पुरुषार्थ का ही फल मिलना है तो प्रार्थना क्यों करें। क्या ईश्वर को हमारी स्तुति, प्रार्थना से कुछ खुशी मिलती है? क्या ईश्वर हमारी स्तुति से खुश होकर हमें हमारे कर्म, पुरुषार्थ से कुछ अधिक, कुछ अतिरिक्त दे देंगे? यदि ऐसा है तो इसका अर्थ हुआ कि ईश्वर के आनन्द में पूर्णता नहीं है, तो हमारी स्तुति से उसकी प्रसन्नता में वृद्धि होती है। दूसरे वह एक साधारण व्यक्ति की तरह चापलूसी से प्रसन्न हो कर हमें कुछ अतिरिक्त सुख या ऐश्वर्य दे देगा या हमारे दु:ख दूर कर देगा तो यह तो न्याय के विरुद्ध है। तो फिर प्रार्थना करने का क्या लाभ है? प्रार्थना में समय नष्ट करने की अपेक्षा हमें अपना कर्म और पुरुषार्थ ठीक तरह करना चाहिये।

ऐसा सोचने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि पुरुषार्थ (Efforts) कई स्तरों पर होता है। शारीरिक पुरुषार्थ की अपेक्षा बुद्धि से किया गया पुरुषार्थ अधिक मूल्यवान है। बुद्धि और मन का संयुक्त पुरुषार्थ और भी अधिक महत्वपूर्ण है। एक श्रमिक हाथ पैरों से परिश्रम करता है। इंजीनियर का परिश्रम बौद्धिक है। किसी प्रसिद्ध कलाकार की सुन्दर कलाकृति बुद्धि और मन के संयुक्त प्रयास का परिणाम है। इन तीनों स्तरों पर किये गये कर्म के फल का अन्तर आम स्वयं समझ सकते हैं। प्रार्थना भी एक कर्म है। बुद्धि के सारे विचार-विमर्श को रोक कर, मन को एकाग्र करके प्रार्थना करना अध्यात्मिक पुरुषार्थ है। परमेश्वर कर्म का फल देते हैं, तो इस कर्म का फल क्यों नहीं होगा?

प्रार्थना के आध्यात्मिक पुरुषार्थ के फलस्वरूप परमेश्वर की कृपा, प्रेरणा, मार्ग दर्शन, सहयोग तथा अनुकूल परिस्थिति का होना, इतने लाभ होते हैं। इसलिये आप जो भी पाना चाहते हैं, उसके लिये स्वयं के प्रयास, पुरुषार्थ के साथ-साथ प्रार्थना भी करें, मन की गहराई और एकाग्रता से करें, तो उसका फल अवश्य होगा। ■■

MAHARSHI DAYANAND CHARITABLE MEDICAL CENTRE

Arya Samaj Kailash-Greater Kailash-I, New Delhi-110048

Ph.: 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Website : www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2008 Certified

DENTAL CLINIC (दंत चिकित्सा)

Monday to Saturday | Timings : 9:00 am to 1:00 pm

- High Grade Dental Material used
- Fillings, Extraction etc.
- Root Canal
- Tooth Jewellery
- Crowns (Metal & Ceramic)
- Fillings
- Ultrasonic Scaling
- Veneers
- Bleaching
- Denture
- **Equipped with** 4 Dental Chairs, Dental X-Ray Units, Ultra-Sonic, Scalers, Sterilizers etc.

Dr. Priya Nagrath
BDS, PGCOI (Manipal), Implantologist
(Mon-Sat. - 11 am to 1 pm)

Dr. Fareha Rashid
BDS
Dental Surgeon
(Mon-Sat. - 9 am to 1 pm)

Dr. Awantika Singh
BDS
Dental Surgeon
(Mon-Sat. - 9 am to 1 pm)

PATHOLOGY

New Addition HBA1c Machine for test of Sugar of preceding 3 months.

All routine and special investigations

- Haemogram
- Blood Gr. ABO Rh
- Blood Sugar F & PP
- Glycoselated Hb
- Semen
- Hormones
- Lipid Profile
- Liver Function
- Kidney Function
- Urine & Stool
- HIV
- HCV
- Hbs Ag
- WIDAL
- VDRL
- Thyroid Profile
- PSA
- Vitamin D3
- Cultures

Dr. Parminder Singh
MBBS, DCP (Pathologist)

Mon. - Sat. | 9:00 am to 1:00 pm

Treatment For :

GASTRIC / STOMACH DISORDERS

- Apthae (छाले)
- Acidity / Distention
- Obstinate Constipation / Recurrent gastric upset
- Irritable bowl syndrome
- Piles

HOMOEOPATHY

Dr. Reena Varma
(BHMS, NHMC)

Wed. & Sat. - 11:00 am to 1:00 pm

ULTRA SOUND

Facility is available at Arya Samaj Kailash-Greater Kailash-I

₹ 440/-

Dr. Komal Jain, Radiologist
Tue. & Fri. 10:30 to 11:00 am

Dr. Pradeep Dutta, MBBS, DMRD (Radiologist)
Tue., Thurs. & Sat. - 8:30 to 9:00 am

न्यूरोथैरेपी

Advanced drugless therapy, "LET YOUR BODY TREAT ITSELF"

NO PAIN DRUG SIDE EFFECTS EXERCISE INSTRUMENTS

जिसमें बिना किसी दवा, कुप्रभाव (Side Effect) व बिना दर्द के इलाज़ किया जाता है। न्यूरोथैरेपी द्वारा नीचे लिखी बिमारियों का सफल इलाज़ किया जाता है।

- अधरंग
- गठिया
- मनोरोग
- कोहनी का दर्द
- हृदय की नाड़ियों का बन्द होना
- पुरानी कब्ज
- गर्दन दर्द
- एलर्जी
- सूजन
- पेट सम्बन्धी रोग
- साईटिका पेन
- चक्कर आना
- बवासीर
- मासिक धर्म सम्बन्धी रोग
- हाइपोथाइरॉइड

BIRENDRA PRASAD (Neurotherapist) | Mon. to Sat. | 9:00 am to 1:00 pm

HAIR OR SKIN PROBLEMS

(बाल या त्वचा की समस्याओं के लिए)

परामर्श तथा इलाज के लिये : (Consultation)

- नाखून समस्या
- मुँहासे, झाईयाँ
- सफ़ेद दाग, ल्यूकोरमा
- रूसी
- सोरायसिस
- (काले निशान, दाग, धब्बे)
- बालों का गिरना
- खारिश
- त्वचा के संक्रमण

Dr. Jaya Gupta
M.D. Dermatologist & V.D. Leprosy
Mon. & Wed. - 11:00 am to 11:30 am

Dr. Dharamvir Singh
M.D. Dermatologist
Sat. - 10:30 - 11:30 am

बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक विकास हेतु

अमृत पॉल आर्य शिशु शाला

प्रवेश 2021-22

मान्यता प्राप्त कक्षा 1 से 5वीं तक

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048 • फोन : 46593498

प्रवेश 2021-22

संसार को श्रेष्ठ बनाने के उद्देश्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" के साथ मजबूत शैक्षणिक बुनियाद।

सुविधाएं उपलब्ध

❖ योग्य, समर्पित और प्रेरक शिक्षक ❖ बहुत कम फीस ❖ शिक्षक और छात्रों का अच्छा अनुपात ❖ सीसीटीवी कैमरे ❖ खुली हवादार कक्षाएँ ❖ कंप्यूटर एवं स्मार्ट बोर्ड आधारित शिक्षा ❖ मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति उपलब्ध ❖ शीघ्र प्रवेश और शुल्क में सिबलिंग रियायत

कक्षा 6 के लिए अमृत पॉल आर्य शिशु शाला निम्न स्कूलों की फीडर स्कूल है:-

1. कौटिल्या राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, चिराग एन्क्लेव, नई दिल्ली-110048
2. सर्वोदय कन्या विद्यालय नं. 2, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली-110065

3 वर्ष की आयु से